माँ ज्ञान दायिनी-वीणापाणि सरस्वती

देवी सरस्वती-वैदिक संदर्भ

भाग्यविधाता कमल दृग, विद्या देवि प्रणाम
लोचन विशाल ज्ञान के, सिद्ध शारदे-काम

वैदिक देव देवताओं को तीन कोटियों में विभाजित किया गया है- पृथ्वीस्थानीय, अंतरिक्षस्थानीय और द्युस्थानीय। अग्नि, वायु और सूर्य क्रमश: इन तीन कोटियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। इन्हीं त्रिदेवों के आधार पर पहले 33 और बाद को 33 कोटि देवताओं की परिकल्पना की गई है। 33 देवताओं के नाम और रूप में ग्रंथभेद से बड़ा अंतर है। 'शतपथ ब्राह्मण' (4.5.7.2) में 33 देवताओं की सूची अपेक्षाकृत भिन्न है, जिनमें 8 वसुओं, 11 रूद्रों, 12 आदित्यों के सिवा आकाश और पृथ्वी गिनाए गए हैं। 33 से अधिक देवताओं की कल्पना भी अति प्राचीन है। ऋग्वेद के दो मंत्रों में (3.9.9 ; 1.52.6) 3339 देवताओं का उल्लेख है।

वैदिक संस्कृति में पांच प्रमुख देवता पूजनीय है। इनका उल्लेख मिलता है। ये एक ईश्वर के ही अलग-अलग रूप और शक्तियां हैं।

सूर्य - स्वास्थ्य, प्रतिष्ठा व सफलता। विष्णु - शांति व वैभव। शिव - ज्ञान व विद्या। शक्ति - शक्ति व सुरक्षा। गणेश - बुद्धि व विवेक।

अब शक्ति के रूप में देवियों को प्रमुख पूजा जाता रहा है, जिनमें शक्ति की देवी दुर्गा एवं वैभव यश की देवी लक्ष्मी प्रमुख हैं। सरस्वती, उषा एवं पृथ्वी को वैदिक देवियों में गिना जाता रहा है। ऋग्वेद के मंडल 6 के अध्याय 61 की देवी ही सरस्वती मानी गयी हैं। ❖❖❖

माँ ज्ञान दायिनी-वीणापाणि सरस्वती

सरस्वती-स्तुति

या कुन्देन्दु तुषार हार धवला या शुभ्र वस्त्रावृत्ता
या वीणा वरदण्डमण्डित करा या श्वेतपद्मासना।
या ब्रह्माच्युतशङ्करप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा॥

मालिनीपुष्प, शशि,जलबिंदु हार सी धवल, श्वेत वसन गहे
श्वेत सरोज आसन भी, वीणा जिनके हाथ सुशोभित रहे
ब्रह्मा विष्णु महेश पूजते सदा जिन्हें, निर्मल ज्ञान बहे
जड़ बुद्धि चेतन करे, रक्षा कर, मात शारदा नमन तुम्हें

माँ बुद्धि दात्री श्वेत हंसारूढ़ जय कादम्बरी
वीणा करे शोभित सरोरुह आसने श्वेताम्बरी
जड़ अंध तम हर दे हृदय आलोक हे माँ ज्ञानदा
आरोग्य यश पा देव करते वन्दना माँ शारदा

माँ ज्ञान दायिनी-वीणापाणि सरस्वती

शारदा-वंदना

वीणा कर सुशोभित पद्मासन स्थित देवि श्वेताम्बरी नमन
बुद्धि प्रदायनी श्वेत हंस आरूढ कोकिल कादंबरी नमन
जाड्यान्ध तमस को हर अंतस आलोकित कर माँ ज्ञानदा
आरोग्य यश पा त्रिदेव भी करें आराधना माँ शारदा

चतुर्भुजी सस्मित आनन, वेदधारिणी ज्ञान संचारिका
आदि शक्ति भय निवारणी, कुंद पुष्प मुक्ताहार धारिता
देवि जननी ज्योतिर्मय निर्झरनी वीणा पुस्तक धारिणी
ऐश्वर्य दायिनी नमामि देवि शुभ्र ज्ञान रश्मि प्रसारिणी

माँ वागेश्वरी वीणा वादिनी दे दे वागर्थ अभिधा दे
हे कादंबरी कर अंतस परिष्कृत विवेक मनीषिका दे
पीत वसना पीत वर्ण मंडित धरा इसमे प्रेम प्रीत भर
कर प्रज्ञा विभूषित मन हर्षित अंग अंग नवल संचित कर

शुभ्र ज्ञान उत्सर्जित कर चेतस कर धरा धी आलोक से
खोल संकुचित अर्गला वत्सला, माँ मंगला भूलोक से
जयति जयति माँ श्वेत हंस आरूढा कलुष तम हर दे स्पर्श
नवल छंद को नव स्वर दे मेरे गीत को दे नव उत्कर्ष

वीणा वादिनी प्रज्ञा दात्रि, ज्ञान से भर अंतर्मन
नव चेतस नव चेतन प्रवाह, गतिमय आलोक सर्जन
खोलो संकुचित अर्गलायें, मंगला वत्सला मात
श्वेत हंस आरूढा तमस हर, संसिद्धि स्वर मिले धमात

हे देवि प्रज्ञा ज्ञानेश्वरी, मात अंतस अंध काट
कर मेरा जीवन आलोकित, देकर प्रथम ओम नाद
समस्त जग ज्ञानोदित प्रभात, सप्त सुर भाव आनंद
हंस वाहिनी देवि शारदा, ज्योति वर्तिका मकरन्द

दे उद्गारों को नाम नवल, उन्मुक्त उर नवल भाव
गूंथ शब्द माला भर ज्ञाता, नवल आत्म प्रादुर्भाव
पुष्प धारित अंजलि शारदे, माँ करूँ तुझे समर्पित
प्रार्थना मंत्रोच्चारित करूँ, कर चरण प्रांजलि अर्पित ❖❖❖

माँ जन्मदायिनी-स्व. दुर्गावती चौधरी

माँ का जीवन वृत्तांत

वेदों में कहा है मातृ देवो भवः (मा देव तुल्य हों) हाँ, माँ देव तुल्य ही होती हैं।

26 सितंबर, 1924 नवरात्रि के प्रथम दिन। माता जी दुर्गावती चौधरी जी का जन्म हुआ। नवरात्रि के प्रथम दिन जन्म हुआ तो माता-पिता ने दुर्गा नाम रखा। वर्तमान झारखंड में कोल्हान क्षेत्र में चक्रधरपुर राज्य था, उसमें एक छोटी रियासत कराईकेला की थी, उसके राजा थे बसंतलाल जगतरामका। उनके घर जन्मी दुर्गावती 6 भाईयों के बाद हुई लाडली बहन थी, अत: खूब लाड़-प्यार में पली-बढ़ी। धन-दौलत-वैभव की कोई कमी नहीं थी। प्राथमिक शिक्षा घर पर ही हुई। 7 दिसंबर, 1939 को टाटानगर के प्रतिष्ठावान सेठ कालूराम जी चौधरी के पुत्र भोलाराम चौधरी से उनका विवाह हुआ। बचपन से ही उनका मन पढ़ने में लगा रहता। रामायण, वेदांत इत्यादि पढ़ती रहती। लिखने का भी खूब शौक था। उनकी पहली पुस्तक भक्तिरस 1962 में प्रकाशित हुई और खूब पसंद की गई। पांच वर्षों में ही 3 संस्करण निकल गए। उसके बाद उन्होंने वेदांत पर लिखी तो कई पुस्तकें पर प्रकाशित न हो पाई। अपनी आयु के अंतिम दिनों तक उनको चश्मा तक नहीं लगा था और नियमित रूप से लिखती रहती। सत्संग की कैसेट सुनती रहती। जमशेदपुर स्थित महिला सत्संग भवन की 5 संस्थापकों में से एक थीं। अंतिम एक वर्ष पूर्व तक शारीरिक रूप से पूरी सक्षम थीं। दिनांक 23 मार्च, 2019 को उन्होंने अंतिम सांस ली।

माँ शब्द ऐसा है कि विश्व की सर्वाधिक रचनाएँ इस शब्द पर बनी होगी, शायद ही कोई मानव हो जो इस शब्द के प्रति अपनी भावनाएँ व्यक्त न की हों। भावनाओं का माध्यम कुछ भी हो सकता है, पर तासीर उतनी ही गंभीर होती है।

आईये कुछ शब्द सुमन अर्पित कर रहा हूँ, जिन्हें मैंने माता जी के विभिन्न जन्मदिनों पर लिखकर उन्हें समर्पित किया था।

26 सितंबर, 2022

माँ जन्मदायिनी-स्व. दुर्गावती चौधरी

आशाएं स्मृति पथ पर जब आती है स्मृति रथ ले आती है

ले प्रकाश रेखा एक अश्व वह आशा के दौड़ाती है
जिसकी रज से धूमिल आकाश धरा का तिमिर हटाती है
जो आँचल के साये से सारा नभ मण्डल हर्षाती है
आशाएं स्मृति पथ पर जब आती है स्मृति रथ ले आती है।

कोमल सुमन कलियों पर मदंग भ्रमर गुंजन लहराती है
चिड़ियों की मदिर चहचहाहट में मधुरम गीत सुनाती हैं
जिनके यादों की खुशबू मेरा उर सुरभित कर जाती है
आशाएं स्मृति पथ पर जब आती है स्मृति रथ ले आती है।

अर्ध रात्रि में सुनाने स्वप्न लोरी जब भी वह आती है
वह आ अपने हौसलों से प्रेरणा की ज्योति जगाती हैं
पुलकित रोम-रोम कर अंग-अंग रोमांचित कर जाती है
आशाएं स्मृति पथ पर जब आती है स्मृति रथ ले आती है।

नभ मण्डल पर कलुष बदरिया जब अन्धकार फैलाती है
निराशा के कल्मष में भीतर तक अंतस को डुबाती है
लेकर स्मृति तुम्हारी स्फूर्ति नव जागरण तन में समाती है
आशाएं स्मृति पथ पर जब आती है स्मृति रथ ले आती है।

आशाएं स्मृति पथ पर जब आती है स्मृति रथ ले आती है।

26 सितंबर,1924-23 मार्च, 2019

माँ जन्मदायिनी-स्व. दुर्गावती चौधरी

माँ सकल ब्रह्म की उपादेय

जब काली घटा व्योम पर अकस्मात् घिर घिर आये
हटा बादलों को जीवन में उजास लाती है माँ
हृदय जब परेशानियों की दाह से जल जल जाए
फिरा हथेलियां शीतल फूहार बरसाती है माँ
चिज़ अशांत और बेचैनियों से जब जब घिरा हो
सुरभित करती खुशबू गुलाब की टपकाती है माँ।

इस सकल ब्रह्म की उपादेय तू
तत्वमसि की साधक परिमेय तू
आप प्रज्ञा प्रदाता मदालसा
आप विज्ञ गार्गी की अभिलाषा
सांध्य बेला में जीवन बेल तू
आत्मा से परे अनित्य खेल तू

आदित्य के आतप में तू छांव सघन वट वृक्ष माँ
ढूँढ़ता रहा खुशियाँ वह तेरी गोद निष्पक्ष माँ
मौन हूँ क्षम्य हूँ नित तेरा वंदन करता हूँ माँ
मन दर्शन करता हूँ तेरा अर्चन करता हूँ माँ
संसृति का सर्वोच्च पुरस्कार मिला वो तू है माँ
ईश्वर का अपरिमेय वरदान मिला वो तू है माँ

उपवन पुष्प लताओं सी सज्जित
तेरी खुशबू करे बाग सुरभित
मैया तू हरी-भरी एक डाल
तेरा होना वृक्ष एक विशाल
बैठ चरण तेरे प्रति क्षण प्रतिपल
सर्वदा लगता बढ़ता आत्मबल

जगत सार तू जीवन-आधार तू मेरा प्यार तू
सुखों का अंबार तू, अंतस संचित उदगार तू
अक्ष तू, प्रतिपक्ष तू, शान तू, मेरा न अभिमान तू
समस्त सुखों की नव खान तू, मदिर जीवन गान तू
जीवनदात्री मुझ पर कृपासिंधु बरसाए रखना
आशीर्वचनों की छांव में मुझे बैठाये रखना ❖❖❖

2021